संसार पुस्तक है

पाठ का सार / प्रतिपाद्य -

प्रस्तुत पाठ 'संसार पुस्तक है' के लेखक 'पंडित जवाहर लाल नेहरु' जी हैं। यह पत्र नेहरु जी ने अपनी पुत्री इंदिरा गाँधी को लिखा था। जब इंदिरा गाँधी मसूरी में थीं और नेहरु जी इलाहाबाद में थे। उन दोनों के बीच बात-चीत का यह एकमात्र माध्यम था। नेहरु जी ने अपनी पुत्री को संसार में बसे ज्ञान के विषय में बताया है। पुस्तक का अध्ययन करने से हमें सीमित ज्ञान की प्राप्ति होती है। लेकिन हमें अपना ज्ञान केवल एक देश तक ही सीमित नहीं रखना चाहिए। अगर हम संसार के हर एक तत्व का अध्ययन करें तो हमें उसके विषय पर पूरी जानकारी मिलती है। इसके लिए मन में जिज्ञासा होना अनिवार्य है। आज हमारे पास पृथवी और उसकी उत्पत्ति से संबंधित सभी जानकारियाँ है। लेकिन जब पृथ्वी की उत्पत्ति हुई थी उस समय हमारे पास कोई पुस्तक नहीं थी। फिर भी हमारे पास उस समय से संबंधित पूरी जानकारी है। क्योंकि वैज्ञानिकों ने उस समय के जानवरों की हड्डियों तथा उस समय से संबंधित सभी तत्वों का अध्ययन किया। इसी प्रकार जब हम अपने आस-पास उपस्थित तत्वों का अध्ययन करते हैं तो उसकी उत्पत्ति से लेकर उसके वर्तमान तक की सम्पूर्ण जानकारी मिलती है। किसी वस्तु का अध्ययन करने के लिए उस वस्तु को समझना आवश्यक होता है। उदाहरण स्वरूप यदी हमें कोई पत्थर गिरा हुआ मिलता है तो हम यह जानने का प्रयत्न करते हैं कि यह पत्थर कहाँ से आया होगा। यदि उस पत्थर के आकार को ध्यान से देखा जाए तो हमें उसके भूतकाल की सम्पूर्ण जानकारी मिल सकती है कि वह पत्थर कितना पुराना है या कितना घिसा हुआ है और यहाँ तक कैसे आया होगा इत्यादि। बाकी चीज़ें भी हमें इसी प्रकार की अनेकों जानकारियाँ दे सकती हैं। बस उनकी भाषा समझना अनिवार्य है।

पाठ से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारियाँ -

(1) पंडित जवाहर लाल नेहरु प्रायः अपनी पुत्री इंदिरा गाँधी को पत्र लिखा करते थे। इन पत्रों से वे एक दूसरे के साथ संपर्क में रहते थे।

(2) उस समय पत्र संचार का लोकप्रिय और सुलभ माध्यम था।

(3) धरती लाखों करोड़ों वर्ष पुरानी है। धरती की उत्पत्ति के काफी समय पश्चात तक यहाँ कोई भी जीव नहीं था।

(4) बड़ी-बड़ी चट्टानों के घिसने से रेत का निर्माण होता है।

पाठ का उद्देश्य -

दुनिया में हर तरफ हमारे आस-पास बहुत महत्वपूर्ण जानकारियाँ है। इसी जानकारी से अवगत कराना और इसके महत्व को बताना ही प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य है।

पाठ का संदेश -

पाठ के माध्यम से लेखक हमें पुस्तक रूपी संसार का अध्ययन करने का संदेश देते हैं। लेखक के अनुसार यह संसार पुस्तक के समान है। इसके प्रत्येक भाग में अमुल्य जानकारियों का भंडार है। केवल सही ढंग से अध्ययन करने की आवश्यक्ता है।